PUNE RESEARCH WORLD ISSN 2455-359X
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF INTERDISCIPLINARY STUDIES VOL 5, ISSUE 2

उन्नतीशील भारत

डॉ. दीनदयाल
असिस्टंट प्रोफेसर
राजकीय महाविद्यालय, माँट, मथुरा
उत्तर प्रदेश भारत.

21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस बनाया जाता है जिसकी उत्पत्ति यानी योग का जन्म संस्कृत के युज शब्द से हुआ है जिसका अर्थ है – स्वयं का सर्वश्रेष्ठ स्वयं के साथ मिलन। पंतजलि के अनुसार योग का अर्थ है, मन को नियंत्रण में रखना। इसकी कई शारीरिक मुद्राएं हैं और आसन भी है। बौद्ध धर्म के अस्तित्व के साथ ही 500 ई0पू0 में योग का जन्म माना जाता है। शिकागो समारोह में योग के बारे में स्वामी विवेकानन्द ने भी वर्णन किया है। योग का वर्णन ऋग्वेद में मिलता है। पंतजलि को आधुनिक भारत का पितामाह कहा जाता है जिन्होने योग सूत्र की स्थापना की थी। यहाँ योग सूत्र का तात्पर्य है फॉमूल/तंतु/धागा। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को 21 जून 2015 गिनीज बुक ऑफ रिकार्ड में 21 जून 2015 को दर्ज किया जा चुका है। भारतीय संस्कृति पूरे विश्व में विख्यात है, जो 5000 वर्ष पुरानी है, जिसमें अलग–अलग धर्म, परम्परा, भोजन, वस्त्र इत्यादि की विशेष मान्यता है, जिसमें शिष्टाचार, तहजीव, सभ्य संवाद, धार्मिक संस्था, मान्यताऐं एवं मूल इत्यादि सम्मलित है। हरेक की अलग–अलग शैली है। यह भारतीय संस्कृति का हिस्सा है। मिटटी के वर्तनों का प्रयोग, समारोह में ढाक, कमल इत्यादि से निर्मित पत्तों के दोनों एव पत्तलों का प्रयोग करना आदि आज हम याद करें तो भारतीय संस्कृत पर न किसी वायरस का प्रभाव पड़ सकता और न किसी आक्रमण का। कोरोना का प्रभाव स्टील, लकड़ी, प्लास्टीक, कपड़े इत्यादि पर पड़ सकता है, परंतु मिटटी के कुल्लड़, मटका तथा अन्य वर्तनों की बात करें तो इन पर किसी वायरस का प्रभाव कभी नहीं पड़ सकता इनका कोई जवाब नहीं है कुल्लड़ की चाय, कुल्लड़ में दही, मटके का पानी इत्यादि नाम से जाने जाते हैं। छह महीने पहले यह बात चर्चा में थी कि प्लास्टीक के कप में चाय निरंतर पीने से प्लास्टीक से हानि कारक रासयनिक पदार्थ गर्म लिक्युड के साथ पेट में चले जाते हैं। इससे कैंसर का खतरा हो जाता है स्टाइरिंग औरगेनिक जिसका रासयनिक सूत्र C6H5Ch=CH2 है।

मानव शरीर में स्टाइरिन की अधिक मात्रा जमा हो जाये तो घातक है क्योंकि यह श्वसन तंत्र को बूरी तरह प्रभावित कर देता है।

मूल्यों की बात करें तो भारतीय संस्कृति मूल्य सिखाती है जो निम्न हैं–

1. नैतिक मूल्य –

नैतिक मूंल्य हमें देश भक्ति के लिए प्रेरित करते हैं। हमारे योगदान की जहॉ आवश्यकता होती है। इससे चरित्र निर्माण होता है जिसमें निःस्वार्थ भावना से देश के लिए कार्य करना होता है। यदि हम कोरोना के दौरान दीवार पर कोरोना जागरूकता पेंटिंग की बात करें, उन स्लोगन लेखन की बात करें, तो उच्च शिक्षित और प्रशिक्षित अध्यापक, कार्यक्रम अधिकारी अपने जरूरी कार्य को छोड़कर तुरंत नारा लेखन में सामाजिक जागरुकता के लिए लग जाते हैं। उन्हे न तो दोपहरी की चिन्ता रहती, और न ही रात की चिंता, और न बारीश और तूफान की क्योंकि उनके चरित्र का निर्माण हो चुका होता है। उनके अन्दर नैतिक मूल्य समा चुके होते हैं। यदि हम किसी पेन्टर से कहें, कि 6X3 फीट का दीवार लेखन कोरोना जागरूकता पर बना दें, तो बह एक–एक इंच का पैसा गुणा भाग करके प्रत्येक दीवार लेखन का बसूलेगा। क्योंकि उसके अन्दर राष्ट्रीय प्रेम की भावना नहीं भरी है। यह तो भारतीय संस्कृति है जो इससे प्यार करने वाले को ये सारी चीजें उनके अन्दर निःशुल्क सीखा देती है उनके अन्दर बोलने से अधिक सुनने की आदत विकसित हो जाती है। वे हरेक शब्द को सोचकर, समझकर ही अपने मुख से निकालते हैं।

2. सांस्कृतिक मूल्य –

सांस्कृतिक मूल्यों का विकास करने वाली भारतीय संस्कृति विश्व में धरोहर के रूप में जानी जाती है। संस्कृति में भारत विश्व में उच्च स्थान प्राप्त है। यहाँ की संस्कृति पर शोधशालाएं विदेशों में स्थापित की जा रही है। पारिवारिक रिस्तों को यहाँ से सिखा जाता है। भाई का भाई से, बहन का बहन से, माता का पिता से, पिता का पुत्र से, पिता का पुत्री से, चाचा का चाची से, ताऊ का ताई से इत्यादि रिस्तों में घनिष्ठता भारतीय संस्कृति सिखाती है। यहा पति पत्नी के रिस्ते उन परिवारों में लम्बें समय तक टिकते है जहा भारतीय संस्कृति का सच्चे अर्थों पालन किया जाता है। यहीं कारण है कि भारत में तालाक के केस अन्य देशों की तुलना में न के बरावर हैं। यहाँ पर माता–पिता और बुजुर्गों की सेवा करते हुए राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवक देखे जाते हैं। अन्य देशों की तरह हमारी संस्कृति को कोरोना प्रभावित नहीं कर सका है कि बुजुर्गों को अलग कमरें में कर दिया जाये और संक्रमण के खतरे के कारण उनसे भेद भाव का रवइया अपनाया जाये। समाज में किसी भी संदेश को प्रचारित और प्रसारित करने में नये पीढ़ी का बड़ा योगदान है। जिसमें राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवको ने सांस्कृतिक मूल्यों के अनुसरण का सच्चा उदाहरण समाज के सामने पेश किया है कि बच्चे, बुजुर्ग, दादी–दादा के पैर दबा रहे है, उन्हे हल्दी डालकर च्वनप्रास का दूध दे रहे हैं।

3. आर्थिक मूल्य –

भारत वर्तमान आर्थिक मूल्यों की तरफ तेजी से बढ़ रहा है और आत्म निर्भर होने जा रहा है। जिसके बारे में सभी परिचित हैं कि किस तरह भारत जिन चीजों के लिए पूरी तरह हतास था – पी0पी0ई0 किट, मास्क, इत्यादि दूसरे देशों से आयात करता था और आज स्थिति यह है कि भारत ने अपने कोरोना वॉरियर्स के लिए स्वनिर्मित पी0पी0ई0 किट एवं मास्को का उत्पादन कर लिया है

और दूसरे देशों में भी इन्हे निर्यात करने की अनुमति दे दी है। भारत की निर्मित कोई भी चीज टिकाऊ होती है वह लम्बे समय तक चलने वाली होती है।

भारत सदैव बासुदेव कुटुम्बव की नीति की बात करता है और उस पर अमल करता है। यहॉ पर आत्मसमर्पण का पाठ पढ़ाया जाता है और उसका अनुकरण देखने को मिलता है। रक्तदान दिवस पर पूरे उत्तर प्रदेश में राष्ट्रीय स्वयं सेवको द्वारा अनेक यूनिट रक्तदान किया गया और समाज में भी रक्तदान करने के लिए लोगों को प्रेरित किया गया। रक्तदान अभियान 21 जून से 13 जुलाई तक चला जिसमें रक्त की कमी से जूझ रहे ब्लड बैंको रक्त की पर्याप्त मात्रा हो गयभ्

भारत में किसी भी समस्या के हल के लिए सरकारी तंत्र के साथ–साथ समाज सेवी संस्थानों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। कोरोना महामारी के दौरान लोगों ने जिस धैर्य समांजस्य का परिचय दिया है। वह देश की अखण्डता को दिखाता है।गरीब मजदूर जिस तरह लॉकडाउन के दौरान एक स्थान से दूसरे स्थान तक आये उसमें स्वयं सेवी संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। एमएसएमई के लिए सरकार ऋण उपलब्ध करा रही है जिससे लोगो को रोजगार के लिए दूर न जाने पड़े वे छोटे–मोटे उद्योग स्वयं स्थापित कर सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

Arya, Prof P. K. Dynamics of Success. Manoj Publications, Delhi, 2013. ISBN: 9788181339881. Print.

Ruttan, Vernon (1977). "The Green Revolution: Seven Generalizations". International Development Review. **19**: 16–23.

Sen, Amartya Kumar; Drèze, Jean (1989). Hunger and public action. Oxford: Clarendon Press. ISBN 978-0-19-828365-2.